

# जीवनचरित्र

जिसमें

श्रीमान् भार्गवकुलकमलप्रकाशक मा-  
तृण्ड मुंशी नवलकिशोर जी (सी,  
आई, ई) का विमलचरित्र जन्मसे  
लेकर मरणपर्यन्त वर्णित है ॥

जिसको

उन्नाम प्रदेशान्तर्गत मसवासी ग्राम  
निवासी पण्डित बन्दीदीन दीक्षित  
ने उत्तम ललित छन्दों में  
निर्मित किया ॥

वही

श्रीवाबू प्रयागनारायण की आज्ञानुसार

प्रथम बार

लखनऊ

86

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखानेमें छपा

सन् १८९४ ई० ॥





# श्रीमान्मुंशीनवलकिशोरजीको जीवनचरित्र प्रारम्भः ॥

षट्पदछंद ॥

लंबोदर गजवदन कदन घन विघन पगा  
रन । अशरन शरन कृपाल विकट संकट हठि  
टारन ॥ सुर सरदार उदार दार चारहु फल  
जाको । यश अपार शुचिसार वेद विस्तारत  
बाँको ॥ ध्याय ताहि लवलाय पग चाहि दया  
दग कोरको । बरणहुं जीवन चरित कछु श्रीम  
नवलकिशोरको ॥

सोरठा ॥

भृगुऋषिते उत्पत्ति ज्यहिकुलकीभइजगतमहँ ।



भार्गवकुलस्वइसत्ति विदितभयो अतिबृद्धिलहि  
दोहा ॥

जनमें त्यहिकुल धवलमहँ श्रीयमुनापरसाद ।  
जिनको यशवर्णनकरत भरत हृदय अहलाद ॥

सरसीछंद ॥

पश्चिम देश प्रदेश बेश शुभ जासु अली-  
गढ़ नाम । त्यहि अन्तर्गत बसत लसत इक  
सुभग सासनी ग्राम ॥ वृन्द भार्गव बहुनि ब-  
सत तहँ अति अनन्द दरशाय । औरहु इतर  
वर्ण राजत तहँ धनिक बनिक बरभाय ॥

दोहा ॥

श्री यमुना परसाद के पितृ पितामह आदि ।  
बसेप्रथमत्यहि ग्राममहँ सुखसहरहित उपाधि ॥

ककुभाछन्द ॥

करी बहुत एकत्र रियासत महि ग्रामादि  
इलाका । धाम ललाम रचे विरचे बहु बाँध्यो  
सुयश पताका ॥ करि बहुकाल विशाल भोग  
सुख अन्त गये सुर धामहिं । उज्ज्वल कीरति  
ते प्रगट्यो बहु जगत माहिं निज नामहिं ॥



दोहा ॥

श्री यमुना परसाद के बुद्धिमान गुण खानि ।  
पांच पुत्र संभव भये वर्णहुँ तिन्हें बखानि ॥  
फलचन्द दीरघ तनय तिनते नवलकिशोर ।  
जिनको उज्ज्वल सुयशजग फैलोचारिहुओर ॥

तोमरछन्द ॥

सुत तृतीय तुलसीराम । अरु रामसेवक नाम ॥  
तिन ते दमोदर दास । ये पांच सुत सुखरास ॥  
कवित्त ॥

देवन में सत्त्वगुणी विष्णु ज्यों बखाने जात  
ग्रहन में ग्रहपति गतितमतोरको । मुनिन में  
नारद विशारद गुणिन माहिँ बानरन माहिँ ह  
नूमान बरजोरको ॥ पक्षिनके मध्य जैसे हंसकी  
प्रशंसा होत राम अवतारिन में सुयश अथोर  
को । सरन में मानस औ बरन में द्विज बन्दि  
नरन में जानिये त्यों नवलकिशोरको ॥

दोहा ॥

तिन श्री नवलकिशोरको वरणत चरितउदार ।



जाविधितेलहि जन्मजग कीन्हों सुयशपसार ॥

### कुण्डलिया ॥

पुर मथुरा ब्रजभूमि महँ अति पावन शुभ  
देश । लिखित पुराणन महँ विमल जहँ यदु  
भये नरेश ॥ जहँ यदु भये नरेश वेश करणी  
जिन कीन्हीं । करि २ अमित सुकर्म धर्मसों  
महि भरिदीन्हीं ॥ कृष्णचंद आनन्द कन्द जहँ  
कंसहि मथुरा । तीरथ परम पवित्र विदित जग  
में पुर मथुरा ॥

### ककुभाळुन्द ॥

रीढ़ाग्राम तासु अन्तर्गत बहु अन धन  
सम्पन्ना । श्रीमन्नवलकिशोर जन्म लहि तहां  
भये उत्पन्ना ॥ युग्म नन्द वसु चन्द सुसंवत वि  
क्रम केर बतायो । पूस मास सुखरासतासुमधि  
जन्म समय शुभ गायो । जस कौशलकिशोर  
कौशल्या नवलकिशोर यशोदा । तद्वत् नवल  
किशोरहि जायो माय पाय बहुमोदा ॥ कछुक  
काल रहि वहि रीढ़ा महँ फेरिसासनी आयो ।



मात पिता तिनको पढ़िबे हित पण्डित पास  
बिठायो ॥

भूलाखन्द ॥

बरस दश तक पढ़े पण्डित पास सहित हु  
लास । गये इतने दिवस सुखमहँ भये अति  
मतिरास ॥ पुनि तहां ते आगरे महँ आय कीन  
निवास । पढ़न कालिजमाहिं लागे करि अतिव  
अभ्यास ॥

दोहा ॥

पांच वर्ष पुनि तहँ पढ़यो बीते पन्द्रह साल ।  
बुधिविद्या अतिशयलहयो गहयोविवेकविशाल

तोटकखन्द ॥

लहिकै शिक्षा सब भांति भली । अतिशय  
मति बेलि सुबेलि फली ॥ अखबार निहारक पं  
थगहा । ज्यहिको प्रथमें बहु शौकरहा ॥ मज  
मन पठै अखबारनको । खबरें बहुदेत प्रचारन  
को ॥ यहि भांति कछू दिन बीति गये । सिखि  
पत्र प्रचारक रीतिगये ॥



## गोपालब्रन्द ॥

तब उत्साह हृदयधरि आम । पत्र सफीर  
आगरा नाम ॥ स्वयं प्रचार कीन मतिधाम ।  
जानि देश उन्नति परिणाम ॥

दोहा ॥

अति उदार सर्कार लखि बुधि विद्या परवीन ।  
श्रीमन्नवलकिशोर को नियत वर्जाफा कीन ॥

## रोलाब्रन्द ॥

आवत षोडश वर्ष हर्ष हिय में शुभ साजे ।  
सुष्ठु मुहूरत पाय जाय लाहौर विराजे ॥  
मुंशी हरसुखराय केर तहँ रह यंत्रालय ।  
करिबो तहँ उद्योग कीन मनमें असरूयालय ॥

सोरठा ॥

धरि उर सुखद विचार यंत्रालय महँ रहबभल ।  
मुलाजिमी स्वीकार कीन्ह्यो हरसुखराय की ॥

दोधक ॥

कार गह्यो अखबार नवीसी । शुद्ध विचार



पखो यह दीसी ॥ लाग लिखै मजमून त्यहीकी ।  
बेलि चली बढ़ि बुद्धि सहीकी ॥

दोहा ॥

सीगा सब अखबार को लियो आपने हाथ ।  
वर प्रबंध लागे करन उत्तमता के साथ ॥

सोरठा ॥

नाम तासु अभिराम कोहनूर अखबार बर ।  
विदितदेशमहँ आम जानत सज्जन विज्ञजन ॥

चौपाई ॥

यावत काम रीति जस चाही । नीति प्रती-  
ति सहित निर्वाही ॥ भई प्रबंध करन महँ उ-  
न्नति । सम्मत शुद्ध सदै बुधि गुन्नति ॥ करिबर  
इन्तिजाम दिखरायो । भयो प्रसन्न स्वामि सुख  
पायो ॥ सब अधिकार सौंपि तबदीन्हयों । रीति  
प्रतीति जानि भलिलीन्हयों ॥

सोरठा ॥

बीते किंचित काल भयोहाल तहँ आनि अस ।



मुंशी हरसुखलाल अकस्मात् भे विपति वस ॥  
 निश्चय क्यहू प्रकार होनहार होवो चहै ।  
 भोतहैं कारागार मुंशी हरसुखराय को ॥

दोहा ॥

स्वामि दुःखलाखि दुखितकै मुंशी नवलकिशोर ।  
 लागे करन उपायवर रह्यो जहांलग जोर ॥

त्रिभंगी ॥

करि यतन अनेका सहित विवेका तन मन  
 तामहैं दीन्हयों । शुभशील स्वभावन बुद्धिप्रभा  
 वन हुक्कामन खुशकीन्हयों ॥ बहु समयन आयो  
 विपति हटायो मालिक को सुख दैकै । अतिल  
 हयो प्रशंसा गतसबशंसा सुयश बीज बरवैकै ॥

मधुभार ॥

त्रय चारि वर्ष । तहैं रहि सहर्ष ॥  
 पुनि असविचार । उरलीन धार ॥

दोहा ॥

आवत साल इकीसवों करिउर गणपतिध्यान ।



छाँड़िनौकरी हर्षसह तहँते कियो पयान ॥  
आयआगरेमहँ कियो कछुककालपुनिबास ।  
पुनि उरमंत्र दृढ़ाय अस करी औरही आस ॥

### हरिलीला ॥

सौमित्रनग्रमहँ आय उमंग छाये ।  
ठहराय मंत्र शुचि लागकरै उपाय ॥  
सरसायवुद्धि दरशाय विचार चारु ।  
सुरराय शंभुपगध्याय धर्यो सुकारु ॥

### ककुभा ॥

बलबाको गड़बड़ त्यहि अवसर अति अ-  
ड़बड़ रहबेरा । भयन तासुआन्यो मनकिंचित्त  
नेक बिलंबनहेरा ॥ वरविचार ठहराय हृदयमहँ  
लै निदेश सर्कारी । सबसुख आलय यंत्रालय  
की नीवँ मनोहरडारी ॥

### सोरठा ॥

सब सामान मँगाय करि उपाय उत्तम तबहिं ।  
गणपति चरण मनाय यंत्रालय प्रारंभ किय ॥



## चौपाई ॥

वहि अवसरलक्ष्मणपुरमाहीं । रह्योद्वितिय यंत्रा  
 लय नाहीं ॥ दयादृष्टि रघुनायक हेरी । बढ़यो  
 काम लागी नहिं देरी ॥ चलन लग्यो सुख सों  
 यंत्रालय । होन प्रबंध लग्यो अति आलय ॥  
 मिलिकै हुक्कामन खुशकीन्हयों । सकलकाम  
 सर्कारी लीन्हयों ॥

## दोहा ॥

यद्यपि धन संकेतता रही सही वहि काल ।  
 तदपि हर्ज कछुनहिं भयो दाहिन रामकृपाल ॥

## तोटक ॥

अति उत्तम काम बिलोकि तबै । परसन्न  
 भये हुक्कामसबै ॥ धनलागमिलै बहुताइतसों ।  
 पड़िगै जड़ सुंदरसाइतसों ॥ प्रतियोसबदै बर  
 कारलगो । मदतिउमहँ त्यों सर्कारलगो ॥ नर  
 नौकर आय अनेक भये । करिकाम भले अ-  
 धिकार लये ॥



## कवित्त ॥

कछु दिन बीते मनचीते अभिलाष सब  
लाख लाख भांतिते सुफूलिफलिबेलगे । जितो  
कारबार व्यवपार व्यवहार आदि प्रति दिन  
बढ़ि २ धनभलिवेलगे ॥ शील सुघराई चतु  
राई औ बड़ाई बहु छाई घन विघन गणेश  
दलिवेलगे । आपहीते आप परतापको प्रका  
शभयो शत्रुउरताप करि कर मलिवेलगे ॥

नाम अभिराम ठाम ठाम में विदित भयो  
ग्राम ग्राम धाम धाम जानि सबलोगगे । चहुँ  
ओर छोरलगि नवल किशोर यश उज्ज्वल दु  
नीमें दिपो भागिसब शोगगे ॥ गिनती रईसन  
में थाप अवनीशनमें भिरि बीस हीसनमें भूरि  
सबभोगगे । प्रतिदिन विभव बरधिवेके बंदी  
कवि अनायास हाथमध्य आय सब योगगे ॥

## भुजंगप्रयात ॥

बढ़यो कारखाना तबै बेप्रमाना । रमालै ठि-  
काना कियो धाम थाना ॥ लये मोल मकान के  
एकभारी । कई एक कोठी सवाँरीनियारी ॥ कई



एक सीगा किये कारहू में । लगायो चितै खूब  
ब्यापारहू में ॥ शिला यंत्र टाईपके प्रेस न्यारे ।  
सवारे मिशीनों के भारे कतारे ॥

### सोरठा ॥

अतिशय कियो प्रचार प्रेरि देश महँ पत्रको ।  
नाम अवध अखबार उर्दू बर मज्जमून युत ॥

### चामर ॥

छापि २ पुस्तकें अनेक भांति २ की ।  
देशमें प्रचार कीन भिन्न २ जातिकी ॥  
काव्यऔपराणकोश धर्मशास्त्रआदिजे ।  
गुप्त कै गये ते कै गये ते ग्रन्थ बादिजे ॥

### मालिनी ॥

धन व्यय बहु कै कै ग्रन्थ खोजे मँगाये ।  
बुधजन मतलैकै शुद्ध उल्था कराये ॥  
सब विधि निज मुद्रा यंत्र में त्यों छपाई ।  
जग प्रकट करी सो भूरि पाई बड़ाई ॥



## शोभना ॥

और वैद्यक ज्योतिषहुके ग्रन्थ अमित मँगाय ।  
देश भाषा माहिं उल्था बुधनते करवाय ॥  
छापि सुंदर टैपमें परचार जग महँ कीन ।  
उपकार हित जनु देशके अवतारही धरिलीन ॥  
यवन मतकी बहु कितावैं लुगत आदि कुरान ।  
छापिसहित विधान कीन्ह्यो सर्वविधिसन्मान ॥  
कितक इंगलण्डीयमत की पुस्तकें अप्रमान ।  
कीन मुद्रित मुद्रित दै दै द्रव्य अरुबहु मान ॥

## कवित्त ॥

देश उपकारक प्रचारक सुदेश मत शुद्ध  
पथ धारक न दूसर निहायो अस । धरम स्व  
रूप मतियूप दया कूप बर सुकरम करि २ ज  
गत पसायो यस ॥ बन्दी कवि कवि बुध बृन्द  
न अनन्द दानि सबगुण खानि जानि हिरदै बि  
चायो अस । नवलकिशोर धरि नवलकिशोर  
तन जगत भलाई हित रूप नर धास्यो अस ॥

सुयश सुवेश देश देशन में पूरि गयो जैसे  
बंदि चंद्रिका प्रकाशै महताबकै । धरम कि बे



ली चहुँ ओर बरबेली घनी अरि उर कांपै सु  
 नि गालिबी रुआबकै ॥ अंग अंग शीलताकि  
 बिलसै तरंग चारु विभव अकथ समरत्थता  
 सुदाबकै । याही तेज ताब देखि हरष बढ़ाय  
 उर दीन्ह्योँ ईगलएिडनी ( सी, आई, ई )  
 खिताबकै ॥

चौपाई ॥

जग उपकार सर्व बिधि चाह्यो । यथा श  
 क्ति कीन्ह्योँ निरवाह्यो ॥ दुखी अनाथ वृद्ध  
 लाचारन । कीन्हें अन धनादि उपचारन ॥  
 वृद्ध नौकरन पिंशन दीन्ह्योँ । सह कुटुम्ब प्रति  
 पालन कीन्ह्योँ ॥ डाक्टर वैद्य हकीम घनेरे ।  
 नौकर किये देश हित हेरे ॥ दुखी मरीजन की  
 बिन पैसा । औषधि होत चाहिये जैसा ॥ अं-  
 ध अपाहिज जो लखिपाये । शीत काल महँ  
 बस्त्र बँटाये ॥ तालिबइल्म दीन जो रहे । कछु  
 सहायता उनसों चहे ॥ फीस किताब आदि  
 तिनको दे । पढ़न माहिँ दीन्ह्योँ बहु मोदै ॥

दोहा ॥

वरणी करणी कहँलगे धरणी महँ चहुँ ओर ।



खोजेनहिं असमिलहि नर जस श्री नवलकिशोर ॥

ककुभा ॥

भार्गव बोर्डिंगहौस अपूरब रच्यो आगरे  
माहीं । मुद्रावीस सहस व्यय कीन्ह्यो बालक  
पढ़त तहांहीं ॥ नियत रहन हित सदा सर्वदा  
चलिबो व्यय साधारन । गावँ खरीदि लगाये  
तामहँ दृढ़प्रबन्धके कारन ॥ एकसहस्र पांचशत  
मुद्रा लाभ बार्षिकजामें । सो संपूरण धनगावँन  
को खर्च होतहैतामें ॥ पन्द्रहसोलहसहस रुपैया  
लगो इमारत माहीं । लखतै बनत तासुशोभा  
शुभ कहनयोगहै नाहीं ॥ जगत लाभहित और  
अनेकन करीधरी शुभबातैं । सो सब अकथधर्म  
कोगाथा लह्यो सुयश बहुजातैं ॥ अस्पताल वि-  
द्यालयकेते होत शिकस्त निहारे । चंदामाहिं स  
हस्रनमुद्रा दैदैं तिन्हेंसम्हारे ॥ उत्तरओर लक्ष्म  
ण पुरके गोमतिनदी किनारे । बनवाई उत्तम  
कागज कल अचरज होतनिहारे ॥

चौपई ॥

मेवर सन्दूल कालिज जौन । विदितप्रयाग



मध्य अति तौन ॥ तहां कुतुबखाना इकदीन ।  
विद्यालाभ सुलभ जगकीन ॥

### भुजंगप्रयात ॥

तहांहीं सुकायस्थ को पाठशाला । लसैखूब  
आला जहाँसे निराला ॥ दियो पुस्तकालै तहां  
एकभारी । कहाँलौ कहैं कीर्ति ताकी पियारी ॥

### दोहा ॥

एक सहस मुद्रादियो वही किताबन साथ ।  
जगजीवनके फलसकल लिये आपने हाथ ॥

### शोभना ॥

केनिंग कालिज लखनऊमहँ पुस्तकालयदीन ।  
सरजार्जकोपर नामकी करियादगार नवीन ॥  
अरुबरेली माहिं दीन्ह्यो पुस्तकालय एक ।  
स्वई फैजाबादहू मह दीन्ह करि शुभटेक ॥

### ककुभा ॥

श्री भार्गवनेशनल एसोसीएशन मथुरामाहीं ।  
दीनकुतुबखानाजगजाना कहेनगुणगणजाहीं ॥



जम्बूअरु कश्मीर प्रगट जे चहुँ दिशि बर रजधानी ।  
तहुँ उँकुतु बखाना शुभ दीन्हे नृप हित नाम निशानी

शोभना ॥

श्री सवाई रामसिंह भुवाल जयपुरपाल ।  
कीयादगार विचार हित तहुँ दीन पुस्तक आल ॥  
भांतियहि करि चरित बहु भरि सुयश जगमहुँ आम ।  
देशोपकारक काम किय अरु प्रकट आपन नाम ॥

कवित्त ॥

महाराज राज अधिराज श्री महेन्द्रसिंह  
आली पटियाल भूमि पाल जे बखाने अति ।  
तिनकी उदार यादगार निर्धार हित उचित  
विचार मनमानि जानि ठाने अति ॥ सहित  
उछाह पुस्तकालै तहुँ दीन्ह्योँइक कीन्ह्योँ सब  
भांति यशख्याति सन्माने अति । याही लागि  
नवल किशोरके अथोर गुण पगपग मगमग अग  
जग जाने अति ॥

ककुभा ॥

सरचार्लस एचीशन केरी यादगार हित भारी ।



दियो पुस्तकालै सुविशालै बरकीरति बि-  
स्तारी ॥ औरहु सहायता हितताकी नक्रदपांच  
शतमुद्रा । सहउत्साहसमर्प्यो सुंदरबाढ्यो सुयश  
समुद्रा ॥ रीडिइन्स्टीट्यूट आक्स फोरड महँ यह  
बिधि कीन्ह्यो । यूनि वर्सिटी मध्य हर्षसह लाय  
बरेरी दीन्ह्यो ॥ कायम जौन अलीगढ़ में बर  
लायल लायबरेरी । तहां कुतुबखाना मनमाना  
दीन्ह्यो शुभपथहेरी ॥

### शोभना ॥

नक्रद मुद्रा दश हजार उदार तामहँ दीन ।  
कीन जगउपकार अरुबहुभारयश शिरलीन ॥  
लखनऊ तहजीब जल्सा माहिं लायबरेरि ।  
देघनेरि सुहेरि शुभपथलइ प्रशंसा ढेरि ॥

### ककुभा ॥

जुबलीहार्डस्कूल लखनऊ महँ सहाय आसि  
कीन्ह्यो । मुद्रा पन्द्रह सहस देय कै धर्म अर्थ  
फल लीन्ह्यो ॥ पन्द्रह सहस रुपैया लेडीडफ  
रनफंडम दीन्ह्यो । पांच हजार मकान कि खा  
तिर औरहु अर्पण कीन्ह्यो ॥



## शोभना ॥

विदित नैनीताल रेम्जी अरुपताल अगार ।  
तहां मुद्रा पांच शत दै कीन जगउपकार ॥  
चरित अमित अपारयहिबिधिकहेहोत न पार ।  
है सुरसना माहिं बशना करहि ओ निर्धार ॥

## सवैया ॥

और सुनौ तिनकी कछु कीरति जीरति चा-  
हत भाषै अगारी । प्यारी लगै उपकारी लगै  
सुखभारी जगै औ भगै दुख भारी ॥ भूली न  
काहुहि भूली सबै मन फूली फली फल फूल  
सवारी । सो फूलवारी कि न्यारी छटा कवि बंदि  
निहारी भई मतिवारी ॥ एक समय सर्कार बि-  
चारिकै चाहत आगरा कालिज तोरहि । एक  
शिकस्त दुजे असहायक तीजे चल्यो न कछु  
क्यहु जोरहि ॥ सो सब कारन ध्यान कस्यो  
औ पयान कस्यो तुरतै त्यहि ओरहि । दै रूपया  
अरु रक्षक दै त्यहि राखि लियो श्री नवल  
किशोरहि ॥



## हरिगीता ॥

श्रीअलवर्टविवर्टर के स्कूल में चन्दा दियो ।  
 अरु भारताकरशीशलै सबभांतितेरक्षाकियो ॥  
 विधवाअनाथ तियानके प्रातिपालिवे हितआम  
 को । दीनमुद्रातीनसहसरुकीनजगमहँनामको ॥

## षट्पद ॥

कलकत्तामहँ लेंसडौन लाब्रेरीमाहीं । पुस्तक  
 आलयदीन गिनेगुण कहँ लगजाहीं ॥ जो जो  
 कारज कीन कीन काहूनहिँ अबलौं । रहै सु  
 यश प्रसिद्ध सृष्टि शशि सूरज जबलौं ॥ बंदि  
 अनंदित कै कहत तासुविशदगुण यथामति ।  
 गतिमति कीरति नति उनति है विस्तृत ज्यहि  
 जगतअति ॥

## हरिगीतिका ॥

मेरुढोसी अमल तपथल जगह भलि सुख  
 मूरकी । हैरियासत मध्य जो पटियाल औजय  
 पूरकी ॥ तहँमहर्षी च्यवन जी को रहयो वर



अस्थानसो । बयहुकाल को विरचो रचो पुनि  
भयो जीरण आनसो ॥ नारनौल समीप में  
छवि दीप है मशहूरसो । भे तासु सुंदर थान के  
सोपान आदिकचूरसो ॥ त्यहि माहिं चंदा  
दीन कीन प्रबंध अति उत्तम तहां । यशलीन  
नितहि नवीन ताते चरित गावत सब जहां ॥

### सोरठा ॥

बारह सौ पच्चास संख्या मुद्रा तासु की ।  
फहरत ध्वजा अकास यही धर्म शुभ कर्म ते ॥

### ककुभा ॥

पब्लिकलायबरेरी मेरठ महँ इक पुस्तक  
आलय । दीन्ह्यो सुभग भलाई लीन्ह्यो करि  
उर उत्तम ख्यालय ॥ बारहबंकीमें अप्यो पुनि  
वही भांति सुखमानी । एककुतुबखाना परधाना  
ऐसे उत्तम दानी ॥

### तोमर ॥

राजा जय किशुन दास । को हेतकै सहलास ।



इक कुतुबखाना दीन । अति कर्म उत्तमकीन ॥

सोरठा ॥

चौबे बोर्डिंगहौस माहिं तौन अपोंगयो ।  
यहीभांति यशरौस बांधी दृढ़करि जगतमहँ ॥  
जिनके गुणगणहार देखिलेखि व्यवहारबर ।  
दिये विविध अधिकार श्रीसर्कार उदारने ॥

हरिगीतिका ॥

सन सतत्तर माहिं देहलीकैसरे दरबार में ।  
मेहमानगवरनमेंटकेकै बिदितभे दिशिचारमें ॥  
अवध के दरबार पब्लिक माहिं बहुसन्मानते ।  
प्रथम पदकी मिलतकुसी हाकिमौसबजानते ॥  
सर्कार के दरबारमें अस कोइजल्साज्ञातना ।  
ज्यहिमाहिंनवलकिशोरआदरसेबुलायेजातना ॥

ककुभाञ्जन्द ॥

यूनिवर्सिटी श्री प्रयाग के फैलोपदको पायो ।  
म्युनिसिपल्टीबोर्ड लखनऊके मेंबर कहलायो ॥  
देहिंसायफुरमाय जहांजो सोसब हाकिम मानै ।



टरैन फेरि करैकोउ केतौ नीकीविधि सबजानै ॥

## हरिगीतिका ॥

आनरेरी इंसपेक्टर नियत भे पुनि जेलके ।  
स्वईपदसे युक्त अवधरुहेलखण्ड कि रेलके ॥  
कहांतक कबि कहै कीरति बरणि अगम अपा  
रजू । सबको पियार उदार नवलकिशोर सुयश  
भंडारजू ॥

## दोहा ॥

बुलवावत हुक्कामयहि हेत कमेटिन माहिं ।  
इन्हें बहुत धनदेतलखि और लोग शर्माहिं ॥  
यथाशक्ति तबदेहिं सब कामतुरत कै जाय ।  
तामहँ नवलकिशोर को जायसुयश जगछाय ॥

## शोभना ॥

जौन आवत लषणपुर महँ भूमि ईश रईस ।  
करत ताको हर्षसह सन्मान विस्वाबीस ॥  
यथावत महिमानदारी देत ताहि टिकाय ।  
देततौन प्रशंसि नवलकिशोर हेतबड़ाय ॥



## सोरठा ॥

कहँल गि करहुँ बखान बरणत बनतन विशदयश ।  
धर्मध्वजा फहरान जासु अपूरब जगतमहँ ॥

## ककुभा ॥

उनसठ वर्ष हर्षसह तनधरि कीन्हीं जगत  
भलाई । गाईजात सकल सो मुखनहिं महि  
महँ चहुँदिशि छाई ॥ सो नरवीर धीर धर्मध्वज  
कल्प वृक्ष नरपुरको । अकरुमात तन त्यागि  
रागिसुख अन्तगयो सुरपुरको ॥ शंशि शैर नन्द  
चन्द संवतशुभ फागुन कृष्णसुहायो । दशमी  
भौमवार परभातहि ब्रह्ममहूरत छायो ॥ सन  
शैर नैव वसु चन्द अंकगहि माहफरवरी गायो ।  
ऊनविंश तारीखमाहिं सो स्वर्गबास शुभपायो ॥

## श्लोक ॥

विद्वज्जालप्रवालमालामिलितामल्लीकतांत  
गता यल्लावण्यमयोमणिः प्रकटितोरामानुजा  
ख्येपुरे ॥ श्रीमन्नवलकिशोरनामककथं कर्तुं पुन



इशक्यस कातेव्यक्तिविचारणावदविधे विज्ञप्ति  
गत्याजया ॥ प्रख्याताकरकारकैस्सुकविता क  
ल्लोलकान्तालता व्यक्ताकल्पद्रुमस्यभूमिवि  
वरादाविर्विभूतागता ॥ जातायाजनिताजयान  
रहरेः श्रीमत्कृपातोधरा देवानांहितकाम्यया  
नवलयुक्कैशोरकाख्यामहा ॥ धात्रादीनकदम्ब  
कंबलवता ताताम्बहीनाहितं नश्यंतेतिकपाल  
जालजनिता क्लृप्तामदीयालिपिः ॥ संचिन्त्याम  
लबुद्धिशुद्धममृत पानैकदेशाधिप माहूयार्द्धसना  
धिकारमददच्छ्रीनौलकैशोरके ॥

पद ॥

यशको जहाज डूब्यो रसको समुद्र सूर्यो  
दया को खजानो मानो लूटि कोईलैगयो । दी  
नन अधीनन को मान अरमान टूट्यो विद्याको  
दिवान सो जहान से रितैगयो ॥ १ ॥ बाग अ-  
नुराग को तड़ाग गुणी हंसनको सहजे सुखाय  
हाय दाग दिल दैगयो ॥ २ ॥ पुण्य को पराग  
औ अभागनको भाग वह शीलको सुहागता-  
ग हितको बितैगयो ॥ ३ ॥ शूरन मयूरन को



पूरन पिरीतो मेघ चतुर चकोरनको चन्द सो  
 अथैगयो ॥ ४ ॥ ज्ञानको निधान सन्मान को  
 महान मेरु अप्रमान दानको वितान जनु नै  
 गयो ॥ ५ ॥ हिंदको निशान गुणवाननको प्रान  
 बंदि नवलकिशोर चितचोरसो कितैगयो ॥ ६ ॥

### कवित्त ॥

भारतको भाकर सो क्षितिको क्षपाकर सो  
 क्षमाकर क्षेमको सुब्रह्मही सो टूटिगो । कविवुध  
 बंशान सुहंसन को क्षीरसिंधु अनायास सूखि  
 दया पयहूसों ऊटिगो ॥ पारस प्रवीनन को देव  
 तरु दीननको द्विज गण मीननको बारिधि सो  
 बूटिगो । नवल किशोर सुरपुरको पयानकीन्ह्यों  
 मानो सनमानको खजानो महिलूटिगो ॥

गाहँक गुणजन के गुणको गरीबन को ग-  
 रुता गिराको गुरु गायन को धायधाय । बा-  
 हक सविधि सुख शीलको बितैको हितै सुलभ  
 सुभावको प्रभावको सुभायभाय ॥ बंदीकवि  
 कविकोविदनको कलपतरु कीरतिकुवेर करुणा  
 को उमरायराय । नरपुर पूरण पुरन्दर प्रसिद्ध



स्वइ नवलकिशोर क्याहि ओरगो हिरायहाय ॥

जासु यश विशद विशेष वेश कढिकढि  
बाढि बाढि पुहामि दिगंतनलौ भरिगो । अतल  
वितल तलातललौ लहरि सोई छहरि पताल  
फणी फणपै फहरिगो ॥ फेरि फहरान आस-  
मान के विमाननमें जाय मघवानपुर वीथिन  
विथरिगो । हरिगो हेरायगो सो नवलकिशोर  
हाय पृथिवी को पूत पुण्यपादप उखरिगो ॥

सुकृत सुमूलजाकी प्रविशि पतालगई अति  
टढ़ टढ़ताको नालहू टढ़ायगो । सुयशको पात  
छहरात रह्यो कालसब ढाकि अविवेक बारि  
स्वच्छ छवि छायगो ॥ बंदीकवि विकसि विशेष  
वेश विभव के विमल दलन सों दिपति दरशा  
यगो । हजरतगंज सरमानसको हाय सोई न  
वलकिशोर कंज मंजुल भुरायगो ॥

बोय खुशबोयसनो विभव विवेकबीज सुकृत  
सलिल सींचि क्षितिपै क्षितैगयो । मैटिकै कुअं-  
कनको घने जनरंकनको भरिवर्ताय सुख संपति  
वितैगयो ॥ मण्डिकै मही में मान खण्डिकै



गुमानअरि दानसन्मान प्रीति मीतन हितै  
गयो । गुणिजन गुणगण रतन परखिबे को  
नवलकिशोर बर पारखी कितैगयो ॥

परउपकारही पियारज्यहि कारहतो चातुरी  
चमत्कार चित्तधरिबो हतो । अमित उपायकरि  
धायधाय चहुं ओर जीवन असीवन को मोदभ  
रिबोहतो ॥ देखि गुणवानन को गुणमानदै विशे  
षि सबविधि दीनन को दुख दरिबो हतो । बिधि  
नविचार्यो त्यहि नवलकिशोरगुण ऐसे नरवर  
को अमरकरिबो हतो ॥

### गजल

कलिकालके तरुकल्पवे श्रीनवलकिशोरकहां  
गये । हरठाम जो खुशनामको यश बीज बोय  
जहांगये १ मशहूर जिनकि उदारता उपकारता  
शुभवार्ता । दरियादिलीकि दयाकि जो दरदर  
पै दरिया बहागये २ गुणज्ञान की सन्मान की  
समतानउनकी आनकी । दुनियांमेंजोनिजटेकसे  
अविवेक ढेरढहागये ३ क्याइलमदानाआलिमों  
की हरतरह सेकद्रकी हरएकके दिलमें इलम



कि अथाह थाह थहागये ४ क्योंनऐसे पुरुष  
कोकविवन्दि विधिने अमर किया । जातेहीइंद्र  
पदौलिया हुइहानि क्या जो वहांगये ५ ॥

## कवित्त ॥

स्वरग पयानजान नवलकिशोर जीको भर  
भर परिगो जहान थरथर में । दानमान सुकृत  
सयान गुणज्ञान आदि थरथर कंपिउठे रोयदर  
दरमें ॥ कहां करेंबास और काकी अब आस  
गहैं हेरिहेरि हारे नरनर घरघर में । देखिशुभ  
लक्षण विचक्षण विशेषि तब आयबसे बावू  
प्रागनारायण करमें ॥

## ककुभाळन्द ॥

श्रीमन्नवलकिशोर जौनदिन स्वर्गवासशुभ  
लीन्हयों । अमरपुरी अमरेशविना तिमिशून ल-  
षणपुरकीन्हयों ॥ चाहिय यथायोग जो जसजब  
सोसब तैसहि भयऊ । स्वच्छ विमान बनाय ता  
सुमधिमृतक देहधरिलयऊ ॥ हजरतगंजरंजसों  
पूरो यावत नर अरुनारी । दुखीसकल परिवार



कुटुम्बी रोवत सुयश सर्वाँरी ॥ द्रव्य लुटावत  
 शुभयश गावत इस्टेशन परआये । संगहजा-  
 रन पुरुष पयादेहि आयेशोक सताये ॥ पूरीटेन  
 इस्पिशल तुरतहि तहँतेगई छुड़ाई । सुर वि-  
 मानसी चली तहांते गंग घाटपर आई ॥ पुनि  
 तहँ ते उठाय शवदेही नेही साथ सिधारे । देर  
 न लगी आय गंगातट सुन्दर सरा सर्वाँरे ॥  
 चंदन अगर दारु गंधादिक धरि घृतसों शुभ  
 साना । रच्यो बनाय जाय बरण्यों नहिं जनु  
 सुरपुर सोपाना ॥ मृतक कर्म उनको विधिवत  
 सुत प्राग नरायण कीन्ह्यों । करि शवदाह सु-  
 भग सुरसरि तट दान द्विजन कहँदीन्ह्यों ॥  
 पुनि लक्ष्मणपुर आय यथोचित काज सकल  
 शुभ कीन्ह्यों । दश दिन दशौगात्र शुभदैके दान  
 द्विजन कहँ दीन्ह्यों ॥ शांति करी फिरि दिवस  
 तेरहें अगणित विप्र जेवाँये । इक २ मुद्रादियो  
 दक्षिणा आदर सहित पठाये ॥ जस क्रिय करी  
 भरथ दशरथकी दानमान सब दैदैं । तस सुत  
 प्राग नरायण कीन्हीं पिता सुयश जगवैवै ॥ परि  
 यर ग्राम जौन गंगातट जिला जासु उन्नामा ।



जो पचपनसहस्र को लीन्हयों श्रीमंशी मतिधा  
मा ॥ सो अभिराम ग्राम सङ्कल्प्यो पुत्र प्रयाग  
नरायन । सम्मत पाय मायको सुन्दर जो अति  
धर्म परायन ॥ सतीशिरोमणि तियमंशीकी युत  
बहु शील भलाई । देवीरूप जानिये तिनको महि  
मा जात न गाई ॥ मंशीजीके लघुबंधव जो बाबू  
राम सु सेवक । तिनके पुत्र प्रयाग नरायण शील  
वान शुभभेवक ॥ बाल अवस्था महँ मंशी जी  
तिनको राशि बिठायो । कै प्रख्यात पुत्र मंशीके  
सुयश जगतमहँ पायो ॥ सुष्टुमहूरत शोधिवोधि  
पुनि गुनियन मंत्र दृढायो । पितु आसनपर अ  
भिशासन हित हितसों तिन्हें बिठायो ॥ लगे  
प्रयाग नरायण देखन कारबार सब वैसै ।  
छोंड़ि गयो पितु विभव अपरिमित हरो भरो  
सब जैसै ॥

दोहा ॥

पाय साटीफिकट शुभ साधि रहथो सब कार ।  
करहिं ताहि अधिकार युत चिरंजीवि कर्तार ॥



## सवैया ॥

शारद सिद्धि सहाय सदागणनायक देहिं सु  
 मंगल भायन । रक्षक वेशमहेश हमेशहि होहि  
 सुबुद्धि सुधर्म परायन ॥ दाहिनिश्रीजगदम्बरहै  
 द्विजदेव कबींद्र करें यश गायन । राज समाजके  
 साज सजे चिरजीवहु बाबू प्रयाग नरायन ॥

इति श्री उन्नामप्रदेशान्तर्गत मसवासग्राम निवासी  
 पण्डित बंदादीन दीक्षित निर्मितश्रीमान् मुंशी  
 नवलकिशोर जीको जीवनचरित्रसम्पूर्णम् ॥

हकतसनीफ़ महफूज़है बहक इसछापेखानेके ॥